चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक जागरण .....

दिनांक 17.7.2019 पृष्ठ सं. ..... 19 ..... कॉलम ..... 2-8 .....

ग्लोबल वार्मिंग से 2050 तक 10 फीसद प्रजातियां हो जाएंगी विलुप्त

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस कालेज के जीव विज्ञान और मत्स्य पालन विभाग की तरफ से दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष डा. ओपी चौधरी ने मुख्यातिथि शिरकत की। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डा. चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। डा. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य

जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष डा. ओपी चौधरी ने एचएयू में जैव विविधता पर आयोजित कार्यक्रम में की शिरकत

मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है।

40177 प्रजातियों से लगभग 40 फीसद विलुप्त होने के खतरे पर : डा. ओपी चौधरी ने कहा उर्वरक और कीटनाशक के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है, जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था। इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियां खतरे में हैं, जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आइयूसीएन रेड लिस्ट मानदंड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 फीसद को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने सीडी व एल्यूमनाई बुक का विमोचन किया। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। उन्होंने कहा इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को एक मंच पर इकट्ठा होकर जलवायु परिवर्तन के जैव विविधता पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को कम करने की नवीनतम तकनीकों को प्रस्तुत करना है ताकि जैव विविधता को बनाए रखा जा सके।

मुख्य अतिथि डा. ओपी चौधरी सीडी का विमोचन करते हुए। ● जागरण

पांच से अधिक राज्यों से आए प्रतिभागी

जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्षा डा. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, बिहार आदि विभिन्न राज्यों से प्रतिभागी भाग लेने आए हैं। प्रतिभागियों का स्वागत डा. एसके सहरावत, निदेशक अनुसंधान ने किया। इस अवसर पर विवि के कुलसचिव डा. बीआर कंबोज, ओएसडी टू वीसी डा. एमके गर्ग, डीन, डायरेक्टर्स, फैकल्टी व छात्र और विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागी उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... हरि. भूमि .....
दिनांक 17.2.2019 पृष्ठ सं. 14 कॉलम 2-3

ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां हो जाएंगी विलुप्त

जैव-विविधता का कम होना चिंता का विषय : डॉ. चौधरी

- हकृवि में जैव-विविधता : इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर पर दो दिवसीय सेमिनार का शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। सीडी का विमोचन करते मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी।

केंद्र सरकार के जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष एवं पशुपालन व डेयरी विभाग के संयुक्त सचिव डॉ. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। अध्यक्ष डॉ. चौधरी मंगलवार को हकृवि बेसिक साइंस कालेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। सेमिनार की अध्यक्षता कुलपति प्रो. केपी सिंह ने की। सेमिनार का मुख्य विषय जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर है।

बढ़ती जनसंख्या व प्रदूषण के कारण नुकसान

मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है।

उर्वरक व कीटनाशकों से वातावरण दूषित

चौधरी ने कहा कि उर्वरक और कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था; इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियां खतरे में हैं जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आईयूसीएन रेड लिस्ट मानदंड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित करना संभव

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बन रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से लुप्त होती प्रजातियों को पुनः बचाया जा सकता है।

देशभर से प्रतिभागी ले रहे हिस्सा

जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्षा डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से प्रतिभागी भाग लेने आए है। प्रतिभागियों का स्वागत डॉ. एस.के सहरावत, निदेशक अनुसंधान, तथा धन्यवाद डॉ. रचना गुलाटी ने किया। मुख्य अतिथि ने सीडी व एल्यूमनाई बुक का विमोचन किया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, ओएसडी टू वीसी डॉ. एमके गर्ग, डीन, डायरेक्टर्स, फैकल्टी व छात्र तथा विभिन्न राज्यों के प्रतिभागी उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक भास्कर .....
दिनांक 17.7.2019 पृष्ठ सं. ..... 2 ..... कॉलम ..... 2-6 .....

एचएयू • बेसिक सांइस कॉलेज में बायोडायवर्सिटी विषय की चुनौतियों व समाधानों पर सेमिनार में एक्सपर्ट्स ने हालातों पर जताई चिंता

मिट्टी और पानी में घुल रहे रसायनों के कारण 40,177 जीव जंतुओं की प्रजातियों में से 40% विलुप्त होने के कगार पर

भास्कर न्यूज | हिसार

पैदावार के लिए जिन रासायनिक दवाओं का प्रयोग कर रहे हैं, उसके कारण 40,177 जीव जंतुओं की प्रजातियों में से 40 प्रतिशत विलुप्त हो गई हैं या फिर विलुप्त होने के कगार पर हैं। आईयूसीएन रेड लिस्ट नाम से एक सूची भी जारी की गई है जिसमें इन प्रजातियों का जिक्र किया गया है। यह रासायनिक दवाएं मिट्टी और पानी के माध्यम से प्रजातियों के लिए काल का काम कर रही हैं, इस पर विचार नहीं किया गया तो यह आगे चलकर मानव जीवन के लिए भी एक बड़ा खतरा बन जाएगी। दरअसल, एचएयू में मंगलवार को बेसिक सांइस कॉलेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा बायोडायवर्सिटी विषय की चुनौतियों व समाधानों पर सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें केन्द्र के जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष व पशुपालन विभाग में संयुक्त सचिव डॉ. ओपी चौधरी ने मुख्य रूप से शिरकत की।

एचएयू में बायोडायवर्सिटी विषय पर सेमिनार के दौरान पशु पालन विभाग के संयुक्त सचिव डॉ. ओपी चौधरी व अन्य।

जानिए... बायोडायवर्सिटी किस प्रकार से चुनौती

डॉ. ओपी चौधरी बताते हैं कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है।

मिट्टी हो रही प्रदूषित

डॉ. चौधरी बताते हैं कि उर्वरक और कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था। इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि हजारों और प्रजातियां खतरे में हैं।

आईयूसीएन रेड लिस्ट में किया है इन विलुप्त हो रहे जीवों का जिक्र

जानें.. क्या है समस्या के कारण

कुलपति प्रो. केपी सिंह बताते हैं कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। वहीं जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्षा डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से एक्सपर्ट हिस्सा लेने आए हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... अमर उजाला .....
दिनांक 17.7.2019 पृष्ठ सं. ..... 2 ..... कॉलम ..... 1-6 .....

सेमिनार

40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है

जैव-विविधता का कम होना चिंता का विषय : डॉ. चौधरी

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस कॉलेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का मंगलवार को शुभारंभ हुआ। सेमिनार में जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष एवं पशु पालन व डेयरी विभाग के संयुक्त सचिव डॉ. ओपी चौधरी मुख्य अतिथि थे। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सेमिनार का मुख्य विषय 'जैव-विविधताः इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर' है।

मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। उन्होंने कहा उर्वरक और कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है, जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था। इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियां खतरे में हैं, जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आईयूसीएन रेड लिस्ट मानदंड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने सीडी व एल्यूमनाई बुक का विमोचन किया।

एचएयू में आयोजित सेमिनार में सीडी का विमोचन करते कुलपति डॉ. केपी सिंह व अन्य।

पुनर्जीवित किया जा सकता है : कुलपति

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही हैं। जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्षा डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मु कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, बिहार आदि स्थानों से प्रतिभागी भाग लेने आए हैं। इस अवसर पर डॉ. एसके सहरावत, कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, ओएसडी टू वीसी डॉ. एमके गर्ग, डीन, डायरेक्टर्स, फैकल्टी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

एचएयू में जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा दो दिवसीय सेमिनार का हुआ शुभारंभ

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....पंजाब केसरी....
दिनांक 17.7.2019 पृष्ठ सं. ....4.... कॉलम 1-6

ग्लोबल वार्मिंग के कारण 4 महाद्वीपों में 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां हो जाएंगी विलुप्त : डा. चौधरी

» जैव-विविधता का कम होना चिंता का विषय

हिसार, 16 जुलाई (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस कालेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा आयोजित 2 दिवसीय सैमीनार का शुभारम्भ हुआ। सैमीनार में डा. ओ.पी. चौधरी अध्यक्ष, जीव कल्याण विभाग व संयुक्त सचिव (पशु पालन व डेयरी) मुख्यातिथि थे। कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सैमीनार का मुख्य विषय 'जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर' हैं।

मुख्यातिथि डा. ओ.पी. चौधरी ने अपने सम्बोधन में कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि 4 महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और वैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं।

मुख्यातिथि डॉ. ओ.पी. चौधरी प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए।

कीटनाशकों से मिट्टी होती है दूषित

उन्होंने कहा कि उर्वरक और कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था।

वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा

कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। सैमीनार में जम्मू-कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से प्रतिभागी भाग लेने आए है।

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ...... नभ-छोर ......
दिनांक 16.7.2019 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 6-8

जैव-विविधता का कम होना चिंतनीय: चौधरी

हिसार/16 जुलाई/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस कालेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा 'जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर' विषय पर आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का आज शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि जीव कल्याण विभाग के अध्यक्ष व संयुक्त सचिव पशु पालन व डेयरी डॉ. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पैर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। न्होंने कहा उर्वरक और कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था, इसके अलावा वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियां खतरे में हैं जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आईयूसीएन रेड लिस्ट मानदंड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने सीडी व एल्यूमनाई बुक का विमोचन किया। कार्यक्रम अध्यक्ष कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी वं निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। उन्होंने कहा इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को एक मंच पर इकट्ठा होकर जलवायु परिवर्तन के जैव विविधता पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को कम करने की नवीनतम तकनीकों को प्रस्तुत करना है ताकि जैव विविधता को बनाए रखा जा सके और इसके संरक्षण के लिए रणनीति तैयार करने और उन्हें लागू करने की सिफारिश की जा सके। विशेषज्ञों और युवा वैज्ञानिकों के लिए यह सेमिनार प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अधिकारियों के साथ बातचीत करके अपने शैक्षणिक और वैज्ञानिक कौशल को बढ़ाने का एक उत्कृष्ट अवसर प्राप्त होगा। जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्षा डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मु कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से प्रतिभागी भाग लेने आए है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम .... नित्य शक्ति टाइम्स ....
दिनांक 16.7.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 1-2

जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय : चौधरी

हिसार, 16 जुलाई (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस कालेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का आज शुभारंभ हुआ। सेमिनार में डॉ. ओपी चौधरी अध्यक्ष, जीव कल्याण विभाग व संयुक्त सचिव (पशु पालन व डेयरी), भारत सरकार मुख्य अतिथि थे। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सेमिनार का मुख्य विषय 'जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर' है।

मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। उन्होंने कहा उर्वरक और कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था; इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियां खतरे में हैं जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। आईयूसीएन रेड लिस्ट मानदंड का उपयोग करके मूल्यांकन की गई 40,177 प्रजातियों में से लगभग 40 प्रतिशत को अब विलुप्त होने के खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने सीडी व एल्यूमनाई बुक का विमोचन किया।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आजकल

मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रलुप्त होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है। उन्होंने कहा इस सेमिनार का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को एक मंच पर इकट्ठा होकर जलवायु परिवर्तन के जैव विविधता पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को कम करने की नवीनतम तकनीकों को प्रस्तुत करना है ताकि जैव विविधता को बनाए रखा जा सके और इसके संरक्षण के लिए रणनीति तैयार करने और उन्हें लागू करने की सिफारिश की जा सके। विशेषज्ञों और युवा वैज्ञानिकों के लिए यह सेमिनार प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अधिकारियों के साथ बातचीत करके अपने शैक्षणिक और वैज्ञानिक कौशल को बढ़ाने का एक उत्कृष्ट अवसर प्राप्त होगा।

जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्षा डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मु कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से प्रतिभागी भाग लेने आए हैं। प्रतिभागियों का स्वागत डॉ. एस.के सहरावत, निदेशक अनुसंधान, तथा धन्यवाद डॉ. रचना गुलाटी ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, ओएसडी टू वीसी डॉ. एम.के. गर्ग, डीन, डायरेक्टर्स, फैकल्टी व छात्र तथा विभिन्न राज्यों से आये प्रतिभागी उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... सिटी पल्स .....

दिनांक 16.7.2019 पृष्ठ सं. .....3..... कॉलम .....1-4.....

जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय : डॉ. ओपी चौधरी

हकृवि में जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा दो दिवसीय सेमिनार आरंभ

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस कॉलेज के जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का आज शुभारंभ हुआ। सेमिनार में डॉ. ओपी चौधरी अध्यक्ष, जीव कल्याण विभाग व संयुक्त सचिव (पशु पालन व डेयरी), भारत सरकार मुख्य अतिथि थे। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सेमिनार का मुख्य विषय 'जैव-विविधता: इसकी समस्याएं, चुनौतियां और अवसर' है।

मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी ने कहा कि जैव-विविधता का कम होना सभी के लिए चिंता का विषय है। एक अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के अनुसार अनुमान है कि चार महाद्वीपों पर ग्लोबल वार्मिंग के कारण 2050 तक 10 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी। जैव विविधता से प्रभावित कुछ स्वास्थ्य मुद्दों में आहार, स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा, संक्रामक रोग, चिकित्सा विज्ञान और औषधीय संसाधन, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य शामिल हैं। बढ़ते जनसंख्या के कारण, भूमि उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है।

हिसार। मुख्य अतिथि डॉ. ओपी चौधरी सोवी का विमोचन करते हुए।

उन्होंने कहा उर्वरक और कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से मिट्टी का वातावरण दूषित हो जाता है जिससे मानव जीवन के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। 2006 में कई प्रजातियों को औपचारिक रूप से दुर्लभ या लुप्तप्राय या खतरे में वर्गीकृत किया गया था; इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि लाखों और प्रजातियां खतरे में हैं जिन्हें औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी गई है। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आजकल मानवजनित गतिविधियों, पर्यावरण प्रदूषण, संक्रमित खाद्य पदार्थों, पर्यावरण बदलाव, पानी की बढ़ती कमी व निरंतर रूप से वनों की कटाई जैव-विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है। इसलिए जैव विविधता को संरक्षण प्रदान करने से प्रत्युत होती प्रजातियों को पुनः जीवित किया जा सकता है।

जीव विज्ञान व मत्स्य पालन विभाग की अध्यक्ष डॉ. रचना गुलाटी ने बताया कि इस सेमिनार में जम्मू कश्मीर, मेघालय, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, बिहार इत्यादि विभिन्न जिलों से प्रतिभागी भाग लेने आए है। प्रतिभागियों का स्वागत डॉ. एस.के सहरावत, निदेशक अनुसंधान, तथा धन्यवाद डॉ. रचना गुलाटी ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, ओएसडी टू वीसी डॉ. एम.के. गर्ग, डीन, डायरेक्टर्स, फैकल्टी व छात्र तथा विभिन्न राज्यों से आये प्रतिभागी उपस्थित थे।